Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का प्रभाव

सुरतनभाई मानसिंगभाई वसावा
पीएच.डी. शोधार्थी हिंदी विभाग गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
E-mail : Surtan.vasava83@gmail.com Phon no : 9712242484

सारांश :-

गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य मौलिक एवं समृद्ध है। वे अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से गांधी के प्रभाव को देश, समाज तथा लोगों को सीख देने का प्रयास करते हैं और समाज को सकारात्मक नजरिए से देखने का प्रयास किया है। गिरिराज किशोर की दृष्टि व्यापक संदर्भों के साथ जुड़ी हुई है और उनके उपन्यास साहित्य में गांधी विचार से जुड़े रचनात्मकता के विविध आयाम दिखाई देते हैं। गांधी जैसे महामानव की गाथा को समाज के सामने लाने का प्रयास है। गांधी विचार धारा का वर्तमान समय में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आने वाले समय में उनका महत्व रहेगा। किशोर जी ने गांधी के विचार, चरित्र को अपनी लेखनी द्वारा समाज के प्रत्यक्ष मनुष्य जीवन को उसका महत्त्व, उसके कर्तव्य और उसके दायित्व के बारें में बताने का प्रयास किया है। गिरिराज किशोर ने गांधी जी के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को अपने उपन्यास के माध्यम से समाज के प्रत्यक्ष रखने का प्रयास किया है। गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से देशप्रेम, सहनशीलता, संवेदनशीलता, सत्य का व्रत, अहिंसा का व्रत, ब्रह्मचर्य का व्रत, भोजन संयम का व्रत, असंग्रह का व्रत, स्वदेशी की भावना, चोरी न करने का व्रत, निर्भीकता, सेवा का महत्त्व, धर्म का महत्त्व, संगठन का महत्त्व, अहिंसा का महत्व, स्वतंत्रता का महत्त्व और ईश्वर में आस्था रखने आदि बातों की ओर समाज को ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया है।

शब्द कुंजी :- गिरिराज किशोर का जीवन परीचय, शोषण के खिलाफ लड़ना, सच्चाई की ताकत, निडरता का प्रभाव, ईश्वर में आस्था, छोटे बच्चों से प्यार, शाकाहार का प्रभाव, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, अहिंसा का प्रभाव, स्वच्छता का महत्त्व, पदयात्रा के नियम।

प्रस्तावना :

गिरिराज किशोर जी का जन्म 8 जुलाई, 1937 को मुजफ्फरनगर में हुआ था। गिरिराज किशोर की माँ का नाम श्रीमती तारावती था और पिता का नाम श्री सूरज प्रकाश था। जब किशोर जी डेढ़ साल के थे तब उनकी माँ का अवसान हुआ था और पिता का अवसान 28 जून, 1988 को मुजफ्फरनगर में हुआ था। उनके दादाजी अपने धर्म के प्रति अति संवेदनशील थे। रुढि, परंपरा एवं अंधविश्वासों का पालन परिवार द्वारा होता था। पर्दा प्रथा जैसी प्रथाएँ प्रचलित थीं। स्वयं गिरिराज किशोर इस संदर्भ में लिखते हैं कि -

> "हालात कुछ इस प्रकार थे कि जब कभी महिलाओं को बाहर जाना होता था, तब घोड़ा-गाड़ी या फिटिन ज्योढ़ी पर लग जाती थी। दोनों तरफ चादरें तन जाती थी और परिवार की महिलाएँ गाड़ी में आ बैठती थीं। पर्दे डाल दिए जाते थे और गाड़ी महिलाओं को हवाखोरी करा लाती थी। भला क्या हवा

खोरी होती होगी ?"[1]

गिरिराज किशोर बताते हैं कि उनके दादाजी आत्म सम्मानी और गौरवशाली थे पर हालात के साथ बदलते समय के साथ वे समायोजन नहीं कर पाये और उस समय क्रॉग्रेस पूर्ण रूप से समायोजन करने में लगी थी।

गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यास में महात्मा गांधी के जीवन को चित्रित किया है। गिरिराज किशोर ने महात्मा गांधी के जीवन के तीन पक्ष का चित्रण किया है। एक 'मोहनिया पक्ष', दूसरा 'मोहनदास पक्ष', तीसरा 'महात्मा गांधी पक्ष' बैरिस्टरी से लेकर दक्षिण अफ्रीका से लौटने तक उनका मोहनदास पक्ष है ये गांधी भाई पक्ष। बीच बीच में उनका मोहनिया पक्ष भी आता रहता है। गिरिराज किशोर ने बताया है कि - मैंने अपने उपन्यास में 'मोहनदास पक्ष' ही क्यों चुना ? अप्रैल 1995 में गांधी जी पर उपन्यास लिखने की दृष्टि से जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका और मारीशस की यात्रा की तब 'मोहनिया पक्ष' लेकर लगभग दो सौ पृष्ठ लिख चुके थे और उनका इरादा था कि वे संपूर्ण गांधी पर उपन्यास लिखने का था।

गिरिराज किशोर ने "पहला गिरमिटिया" उपन्यास में महात्मा गांधी के दक्षिण-अफ्रिकी जीवन पर आधारित दक्षिण अफ्रीका में स्थित गिरमिटियों की दयनिय स्थिति का सही अंकन किया है। इसमें गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका के संघर्षरत जीवन को उपन्यास का केंद्र बिंदु बनाया है। गिरिराज किशोर ने नौ सौ चार पृष्ठों की रचना में इकरारनामे पर दक्षिण अफ्रीका गए और वहाँ पशु से भी बदतर जीवन जीते भारतीय कुलियों की मुक्ति के लिए प्रेम, अहिंसा और सत्याग्रह के संदेश का सहारा लेकर कुली लोगों को मुक्ति देने का वर्णन किया है।

'पहला गिरमिटिया' में हिदुस्तान से लोगों को गिरमिटिया के नाम पर दक्षिण अफ्रीका ले जाने वाले दलालो के व्यवहार का वर्णन किया गया है। उपन्यास का पात्र थका हुआ लौटता है और अपनी नगियम से कहता है कि – "कभी वह दलाल मिला तो उससे जरूर पूछूँगा तूने तो मुझसे उस देश में भेजने का वादा किया था जहाँ बिन खाये कोई नहीं सोता, फिर इस देश में काहे भिजवा दिया। जहाँ न रोटी है, न अपनी पहचान। बेइज्जती है और रात-दिन की हल्कानी है।" इस प्रकार भारतीय लोगों को रोजगारी के नाम पर वहाँ ले जाकर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

शोषण के खिलाफ लड़ना :-

महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका सेठ दादा अब्दुला एंड कंपनी का केस लड़ने गए थे तब उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा था। 25 मई, 1983 को डरबन में कोर्टरूम ले गये थे तब कोर्ट में जज साहब ने फेटा उतारने पर बोला तब गांधी जी ने बताया कि - "हमारे यहाँ जब किसी सम्मान योग्य स्थान पर जाते हैं तो फेटा उतारते नहीं। वह राष्ट्रीय सम्मान और आत्मसम्मान का प्रतीक है। लेकिन कोर्टरूम में दाखिला होते ही सम्माननीय मजिस्ट्रेट ने मुझे फेटा उतारने का हुक्म दिया जबकि मेरी कंपनी के मालिक और नेटाल के प्रख्यात व्यवसायी दादा अब्दुल्ला पगड़ी पहने थे।" इसी प्रकार गांधी जी ने प्रारंभ में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास किया। गांधी को अपनी

पगड़ी उतारना एक अन्याय सा लगा और उसके खिलाफ आवाज उठाई। वहाँ पर हिदुस्तान के मुस्लिम पगड़ी पहनते थे वे भारतीय मुस्लिम अरब कहलाते थे। इस का गांधी जी ने अखबार में चिठ्ठी लिख कर इसका विरोध किया। गांधी जी के पास रेल्वे का फर्स्ट क्लास का टिकट था। मुसाफरी के दौरान गांधी जी के साथ हुए अत्याचार का गिरिराज किशोर ने बताया है कि - "गोरा रेल्वे के दो गोरे कर्मचारियों को साथ लेकर लौट आया था। वह गोरा और उसके साथ एक आदमी दरवाजे पर खड़े हो गये। तीसरा आदमी मोहनदास के पास आकर खड़ा हो गया और गुस्साई नजरों से देखता हुआ बोला, तुमसे इस डिब्बे में बैठने के लिए किसने कहा ? अपना सामान उठाओ, वैन में चले जाओ, कुलियों के लिए वही है।" इस प्रकार गांधी जी ने बताया कि मैं बैरिस्टर हूँ और मैं इसी डिब्बे में सफर करूँगा। आप मुझे बाहर फिंकवा सकते हैं लेकिन इस तरह उतार नहीं सकते। मैं अधिकार को सत्य मानता हूँ। वह अधिकार मुझे टिकट ने दिया है। इस प्रकार गांधी जी ने अन्याय के खिलाफ सच्चाई के साथ आवाज ऊठाई थी।

सच्चाई की ताकत :-

गांधी जी को अपनी सच्चाई पर पूरा विश्वास था। गांधी जी ने शेठ अब्दुल्ला से वार्तालाप के एक सच्चाई की बात लेखक गिरिराज किशोर बताना चाहते हैं कि - "मैं बस यही जानना चाहता था कि आप मुझ पर कितना विश्वास करना चाहेंगे और कहाँ तक छूट देंगे। अगर मैं तैयब जी से मिला तो यही समझाने की कोशिश करूँगा कि सच्चाई की ताकत बहुत बड़ी होती है। हालाँकि राह ऊबड़-खाबड़ है; पर अगर मंजिल पर पहुँच गये तो वहाँ से धकेले जाने की गुंजाइश कम रहती है।"

निडरता का प्रभाव :-

गांधी जी में निडरता का प्रभाव अधिक देखने मिलता है उनका प्रभाव देखे तो गांधी जी प्रिटोरिया जाते समय कुछेक गोरे अफ्रीकनों से झुँझलाहट करनी पड़ी तब एक साहब ने बताया कि आप वापस लौट जाओ, गोरे आप जैसे पढ़े-लिखे लोगों को बर्दाश्त नहीं करेंगे। तब गांधी जी ने मन ही मन सोचा कि - "स्वयं बर्दाश्त करके ही दूसरों को बर्दाश्त करना सिखाया जा सकता है, प्रिटोरिया तो जाना ही है, एक बार जिम्मेदारी से भाग कर इन्सान जिंदगी भर ही भागता रहता है।" इस प्रकार गांधी जी ने गोरों के साथ निडरता से सत्य को साथ लेकर लड़ने का साहस एक उत्म नमूना बताया था।

ईश्वर में आस्था :-

गांधी जी प्रार्थना से आत्मस्वीकृति की पद्धति को मानसिक उपचार मानते थे। गांधी जी का विचार था कि मनुष्य प्रार्थना द्वारा अपने दुख-दर्द, पाप-पुण्य सब ईश्वर को समर्पित कर देता है। जिस प्रकरा ईसा मसीह ने मानव जाति के लिए असीम बलिदान दिया था। गांधी जी का मानना था कि मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। ईश्वर ने अपने पुत्र को ही प्राणी मात्र का उद्धार करने की जिम्मेदारी सौंपकर धरती पर भेजा है। उसमें आस्था रखनेवाला ही ईश्वर की कृपा का भागी होता है। गांधी जी ने इस के बारें में बताया था कि - "मेरा विचार आपसे अलग है, मेरे विचार में ईसा का त्याग, सत्य, प्रेम, अहिंसा, क्षमा ही उनकी शक्ति थी। ईसाई बनकर ही मनुष्य को पापों से मुक्ति मिलती है, यह बात भी मुझे तर्कसंगत नहीं लगती।" इस लिए गांधी जी का विचार था कि इस लिए मुझे सरमन ऑफ़ माउन्ट की यह बात मुझे सही लगती है कि जो बुरा है उसके सामने सीना

तानकर खड़े हो, अगर वह बायें गाल पर चपत लगाता है तो दूसरा गाल उसके सामने कर दो। शत्रु से भी प्यार करो और जो दुख देता है उसके लिए भी प्रार्थना करो। इस प्रकार गांधी जी को ईश्वर में अटूट आस्था थी। गांधी जी के मुताबित प्रभु के पास पहुँचने का एकमात्र रास्ता प्रार्थना है। प्रार्थना की निरापद शक्ति विध्वंसकारी से विध्वंसकारी शक्ति से कई गुना बड़ी है। अन्तर्मन की पुकार ही प्रार्थना है। वह उसे ही सुनता है।

छोटे बच्चों से प्यार :-

गांधी जी छोटे बच्चों से बहुत प्यार करते थे। बच्चे गांधी जी को बहुत प्यारे थे। इनके बारें में कस्तुर ने बताया है कि - "मोहनदास किस तरह पेट से कान लगा-लगाकर बच्चे की धड़कनें सुनते थे। हालाँकि उसे अजीब लगता था। वह हटा देती थी। तब मोहनदास हँसकर कहता कि अभी से यह इतना बातूनी है तो बाहर आकर पता नहीं कितना बतियाएगा ?" इस प्रकार गांधी जी अपने बच्चों से बहुत प्यार करते थे और दक्षिण अफ्रीका में कुलियों के बच्चों से भी गांधी जी बहुत प्यार करते थे। घर में बच्चों से वार्तालाप और बच्चों से शिक्षा देना सब गांधी जी का बच्चों के प्रति प्यार बता रहा है। गांधी जी कभी कभी हरि के बारें में मन ही मन सोचकर खुश होता कि बच्चा पढ़ना - लिखना सीखेगा फिर अपने बापू को लिखेगा मैं पढ़ना - लिखना सीख गया हूँ। अब बा के नाम की चिट्ठी हमारे पास सीधे भेजा करें। मैं अपनी बा को पढ़कर सुना दिया करूगाँ। इस प्रकार बच्चों की शिक्षा से लेकर गांधी जी बहुत प्यार करते थे।

शाकाहार का प्रभाव :-

गांधी जी शाकाहार में मानने वाले इंसान थे। उन्हे माँसाहार करने वाले लोगों से कोई नफरत नहीं थी पर गांधी जी शाकाहार अधिक पसंद करते थे। गांधी जी ने शाकाहार के बारे में मेटिल्डा ने पूछा कि गांधी जी तुम न मांस खाते हो तो जीते कैसे हो ? गांधी जी ने बताया कि यह मुझे मालूम नहीं कि मैं जीता कैसे हूँ, पर आपके हाथों के खाना खाता हूँ। गांधी जी ने बताया था कि - "यह हमारे अपने हाथ में है कि हम अपना पेट जानवरों की कब्रगाह बनाना चाहते हैं या फिर बगीचा। हालाँकि न बाहर बगीचा दिखाई देता है और न कब्रगाह। बस, अहसास की बात है। एक अहसास तरोताजा कर देता है। दूसरा शायद लहूलुहान। क्या आपको कभी ऐसा नहीं लगता ?" इस प्रकार गांधी जी ने शाकाहार और सादा भोजन खाने में मानने वाले थे। पदयात्रा के दौरान भी गांधी जी सादा भोजन पसंद करते थे। इससे शरीर को कोई नुकसान नहीं होता। गांधी जी शाकाहार पसंद करने वाले व्यक्ति थे।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव :-

गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटिया के रूप में गए भारतियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव कास तौर पर मानते थे। उनका मानना था कि अपनी रोजगारी के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना अधिक आवश्यक है। गांधी जी ने कुली भारतीयों के लिए अंग्रेजी भाषा का थोड़ा भी ज्ञान होना आवश्यक मानते थे। इसके बारें में गांधी जी का मत था कि - "अपने शिष्यों की उतनी ही प्रगति पर संतोष करना पड़ा। नाई बाल काटते हुए थोड़ी गिटर-पिटर करने लगा था। बात समझ में न आये तो पार्डन मी, पार्डन मी कहना सीख गया था। इस मंत्र का उपयोग क्लर्क भी करता था। दुकानदार अपना हिसाब अँग्रेजी में लिखने लगा था। कभी-कभार अँग्रेजी में बोलकर ग्राहकों को चौंका भी देता था।

धंधेवालों को भी गलत-सही अँग्रेजी में चिट्ठी लिख लेता था। जहाँ तक क्लर्क का सवाल था उसके तो क्या कहने। वह अँग्रेजी में मसौदे तैयार करके पैसे कमाने लगा था।" इस प्रकार गांधी जी ने अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का महिमा तीनों शिष्यों को जो कुछ अंग्रेजी में शिक्षा दी थी और वह कमाने लगे थे इसके प्रभाव से गांधी जी को अँग्रेजी शिक्षा कमाई के लिए योग्य मानते थे।

अहिंसा का प्रभाव :-

गांधी जी ने अहिंसा के माध्यम से अफ्रीका में मताधिकार लड़ाई लड़ रहे थे और उन्होंने बताया है कि मताधिकार के प्रयोग का सम्मान अपने आप ही शुरू करना होगा। जिसकी लड़ाई उसका वचन। महोनदास ने प्रत्यावेदन में जोड़ दिया कि - "गिरमिट की अवधि में भले ही मताधिकार न दिया जाय परंतु गिरमिट से स्वतंत्र नागरिक के रूप में अनुभव और योग्यता प्राप्त कर लेने के बाद उन्हें मताधिकार से वंचित रखना अन्याय होगा। दरिद्रता और गरीबी अपराध नहीं है। यह अधिकार उन्हीं लोगों से छीना जा सकता है जो कानून की दृष्टि से अपराधी करार दिये जा चुके हैं। ये सब लोग सच्चे और अपनी जिम्मेदारी को निबाहने वाले लोग हैं।" इस प्रकार गांधी जी ने अहिंसा के माध्यम से आफ्रीकन के भारतीय के लिए लड़ाई लड़ी थी। जिसमें न हिंसा हुई और न नुकसान। गांधी जी ने गिरमिटियों के बारें में भी बताया कि जिनको गोरे प्लाण्टर्स ने जानवरों की तरह से पीटते थे। गांधी जी ने उनके सामने भी अहिंसा से लड़े थे। अहिंसा से लड़ने के लिए गांधी जी ने इंडियन ओपीनियन में लिखा था कि - "ऐसी लड़ाई का नाम सुझाएँ जिसमें न शत्रुता हो, न वैमनस्य, न रक्तपात हो, न तलवार हो न तोप। सबका आधार सत्य हो, बलिदान हो। वह लड़ाई सत्य और प्यार के लिए हो।" इस प्रकार गांधी जी ने अहिंसा के माध्यम से सत्याग्रह की बात लोगों तक पहुँचाई। लोगों ने गांधी जी की गिरफ्तारी पर काले झंडे हाथों में लेकर जुलूस निकाला था। पुलिस को पसंद नही आया। उन्होंने लोगों को तितर-बितर करना चाहा। जब तितर-बितर नहीं हुए तो उन्होंने लोगों को मारना शुरू कर दिया। हम लोगों ने उसका कोई विरोध नहीं किया। और मोहनदास ने उनकी बात सुनकर गद्‌गद हो गये और बताया कि - "आप लोग सच्चे सत्याग्रही हैं, मुझे आप लोगों से अभी बहुत कुछ सीखना है।" इस प्रकार गांधी जी का अहिंसा का प्रभाव जनता सीख गयी थी। इस लिए गांधी जी बहुत खुश थे।

स्वच्छता का महत्त्व :-

गांधी जी ने स्वच्छता का महत्व अधिकतम प्रभावशाली रूप में चित्रित किया है। मुंबई में प्लेग फूट पड़ी थी। राजकोट भी प्लेग की गिरफ्त में आता जा रहा था। लोग डरे हुए और आतंकित थे। अफवाहों का बाजार गरम था। जितने लोग उतने मुँह। आज फलाने मोहल्ले का नंबर आ गया, फला इलाके में इतने लोग मर गये। लोग सिरों पर मौत के भय का तम्बू तान चुके थे। प्लेग फैलता ही जा रहा था। पता नहीं मौत कब आ जाए और चूहे के मुँह में दबाकर रफूचक्कर हो जाय। गांधी जी ने राज्य सरकार को लिखा कि - "मैं दक्षिण अफ्रीका से आया हूँ लेकिन अपने लोगों की सहायता करना चाहता हूँ। प्लेग को रोकने के लिए मेरी सेवाएँ सरकार को पूरी तरह से उपलब्ध है।" इस प्रकार गांधी जी ने लोगों को प्लेग से बचने के लिए लोगों को स्वच्छता का मार्ग बताया था। ताकि बीमारी नाश हो सके। इस प्रकार गांधी जी ने लोगों की सेवा और स्वच्छता का मार्ग बताया था।

पदयात्रा के नियम :-

पदयात्रा से पहले गांधी जी ने पदयात्रा की कुछेक जरूरी बातें बतायी कि सबसे पहली बात खाने के बारे में, चार-पाँच हजार आदमियों के लिए खाने का इन्तजाम आसान नहीं। इतने साधन भी नहीं कि पदयात्रियों को पूरा भोजन मिल सके। हमारे पास जो साधन हैं उनको ध्यान में रखते हुए प्रत्येक पदयात्री को प्रतिदिन सवा सेर डबलरोटी और सौ ग्राम चीनी देना ही संभव होगा। उन्होंने यात्रियों के लिए आचरण तालिका बनायी और उसकी घोषणा कर दी, पदयात्री शराब नहीं पिएँगे, बीड़ी आदि व्यसनों पर न खर्च करेंगे और न किसी से माँगेंगे। यात्रा के दौरान चोरी, दंगा - फसाद नहीं करेंगे, जितना जिसे मिलेगा उसी में संतोष करना होगा। मुखिया की बात माननी पड़ेगी। पुलिस गाली दे, मारे या कोई और ज्यादती करे, सब शांति के साथ सहन करेंगे। रास्ते में या पड़ाव पर गंदगी, पानी, कूड़ा-करकट नहीं फेकेंगे। शांत रहकर अदब और सम्मान के साथ पदयात्रा करेंगे। आकाश के नीचे रहेंगे और धरती को अपना बिछौना समझेंगे। इस प्रकार गांधी जी ने पदयात्रियों के लिए नियम बनाये थे।

उपसंहार :-

अत: उपर्युक्त त्थयों के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में गिरिराज किशोर ने गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका में गिरमिट के रूप में रहते भारतीयों के जीवन को एक गरिमामय रूप से चित्रित किया है। उपन्यास महात्मा गांधी जी के जीवन पर निर्भर रहा है। गांधी जी ने अफ्रीका में स्थित भारतीय लोगों की गिरमिट प्रथा से लड़ते हुए भारतीयों के लिए अथक प्रयत्न किए थे और उनके अनेक प्रकार की यातनाओं से बाहर निकालने का प्रयास किया तो उसका सचोट वर्णन किया गया है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के माध्यम से किशोर जी ने नायक गांधी जी के माध्यम से गिरमिट के रूप में रहते भारतीयों के लिए असह्य अथक प्रयत्नों से उन्हें आजादी और अनेक प्रकार की सेवा त्याग के माध्यम से गुलामी से रंग भेद से और अपने हक के लिए प्रयत्न किए थे। गिरमिट के रूप से गोरे अंग्रेजो से गुलामी में मर रहे भारतीयों को स्वतंत्रता दिलाने एवं मजदूरी का पूरा वेतन मिल सके ऐसा अथक प्रयत्न किए थे। उपन्यास के माध्यम से गांधी जी ने लोगों को श्रम, सत्य, अहिंसा, सेवा, त्याग, स्वावलंबन, शिक्षा, पदयात्रा, सच्चे सत्याग्रही के नियम, प्रार्थना का महत्त्व, माँस, मदिरा का त्याग एवं लोगों से प्रेम भाव से रहना आदि बातों को देश दुनिया के लोगों तक पहुँचाने में अथक प्रयास किया था और आज देश दुनिया के लोग बता रहे हैं कि हिंदुस्तान ने दुनिया को महात्मा गांधी जी के रूप में एक अमूल्य रत्न दुनिया को दिया है जो सत्य अहिंसा के माध्यम के पाठ सिखा कर आज़ादी के मूल्य दुनिया को सिखा गए हैं। आज पूरा विश्व गांधी जी को भगवान के रूप में देखता है। गांधी जी सच्चे मसीहा थे जो दुनिया को सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह एवं स्वच्छता आदि अनेक बातें लोगों के सामने रख गये हैं।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. सदावर्ते, सुरेश, कथाकार गिरिराज किशोर, विकास प्रकाशन, कानपुर, 208027, प्रथम संस्करण, 1996, पृ. 17-18

2. किशोर, गिरिराज, 'पहला गिरमिटिया', भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन, नई दिल्ली, 110032, पहला संस्करण, 1999, पृ. 37
3. वही, 79
4. वही, 95
5. वही, 141
6. वही, 101
7. वही, 146 एवं 165
8. वही, 648
9. वही, 679
10. वही, 818